प्रातः क्लास 23/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों से रूहानी बाप पूछ रहे हैं मीठे–2 बच्चों अपना घर शान्तिधाम याद है ना। भूल तो नहीं गये हो। अभी 84 का चक्र पूरा हुआ, कैसे पूरा हुआ यह भी तुम समझ गये हो सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक। ऐसे और कब कोई पूछ नहीं सकते। मीठे2 लाडले बच्चों से बाप पूछते हैं अभी घर जाना है ना। घर चल कर फिर सुखधाम आना है। यह सुखधाम तो नहीं है। यह है पुरानी दुनिया दुखधाम। हेल। स्मृति में है ना वह है शान्तिधाम। सुखधाम। अभी इस दुखधाम से मुक्त हो जाना है मुक्तिधाम। मुक्ति अथवा शान्तिधाम जैसे कि सामने खड़े हैं। वह है घर। फिर तुम नई विश्व में आवेंगे जहाँ पवित्रता, सुख, शान्ति सभी होगा। यह तो स्मृति में है ना। ज्ञान भी है। बाप को भी पुकारते हैं हे पतित–पावन इस पतित दुनिया से हमको ले चलो। इसमें बहुत दुख है। हमको सुख में ले चलो। स्मृति में आता है। उसको कहा जाता है स्वर्ग। स्वर्ग को सभी याद करते हैं। शरीर छोड़ा कहेंगे स्वर्ग पधारा। लिफ्ट फॉर हेविनली एबोड। किसने लिफ्ट किया? आत्मा ने। शरीर तो नहीं जाता है। आत्मा ही जाती है। अभी तुम बच्चे ही सुखधाम–शान्तिधाम को जानते हो। और कोई भी नहीं जानते। तुम बच्चों को बुद्धि में नॉलेज है शान्तिधाम क्या है, सुखधाम क्या है। तुम सुखधाम में थे। फिर अब दुखधाम में आये हो। सेकण्ड, मिनट, घंटे, दिन, मास, वर्ष बीतते गये। अभी 5000 वर्ष में बाकी कुछ दिन रहे हैं। बाप बच्चों को स्मृति दिलाते हैं। बहुत सहज बात है। इसमें मुँझने की तो दरकार ही नहीं। आत्मा 84 जन्म कैसे लेती है यह भी किसको पता नहीं है। लाखों वर्ष की बात तो किसको याद भी न रह सके। यह तो है ही 5000 वर्ष की बात। व्यापारी लोग भी स्वास्तिका चौपड़ी पर निकालते हैं। उसको गणेश कह देते हैं। गणेश को हाथी का सूढ़ दिखाते हैं। मनुष्य कितना पैसा खर्च करते हैं यह चित्र आदि बनाने। इसको कहा जाता है वेस्ट ऑफ मनी। वेस्ट ऑफ टाइम, वेस्ट ऑफ एनर्जी। तुम्हारे में कितनी ताकत थी। वह दिन प्रतिदिन कम होती गई है। जैसे पेट्रोल मोटर से कम होता जाता है। अभी तो तुम बहुत कमजोर हो गये हो। 5000 वर्ष पहले भारत क्या था। अथाह सुखी था। भारत क्या कहलाता था। कितना जबरदस्त धनवान था। यह राज्य इन्होंने कैसे पाया? राजयोग सीखे थे। इसमें लड़ाई आदि की बात ही नहीं। उनको कहा जाता है ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र। और कोई स्थूल बात नहीं है। ज्ञान के अस्त्र–शस्त्र हैं। ज्ञान–विज्ञान। याद और ज्ञान कितने जबरदस्त अस्त्र–शस्त्र हैं। सारे विश्व पर तुम राज्य करते हो। देवताओं को कहा जाता है अहिंसक। अभी तुम बच्चों को मनुष्य से देवता बनने की शिक्षा मिल रही है। तुम जानते हो हर 5000 वर्ष बाद हम बेहद के बाप से बेहद का वरसा लेते हैं। यह आत्मा की बात है। इसमें स्थूल लड़ाई आदि की बात नहीं। आत्मा पतित बनी है इसलिए पावन होने लिए बाप को बुलाते हैं। तो अब बाप कहते हैं हे मीठे बच्चे अभी घर जाना है। यह है जीवात्माओं की दुनिया। जब तुम अपने स्वीटहोम में हो तो वह है आत्माओं की दुनिया। उनको जीवात्माओं की दुनिया नहीं कहेंगे। यह घड़ी–2 स्मृति में आना चाहिए हम दूर देश के रहने वाले हैं। हम आत्माओं का घर है ब्रह्माण्ड। यह भी बुद्धि में है हम वहाँ रहते हैं। इस आकाशतत्व से पार। जहाँ सूर्य–चाँद भी नहीं होते। वहाँ के हम रहने वाले हैं। यहाँ पार्ट बजाने आये हैं। 84 का पार्ट बजाते हैं। सभी तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। आस्ते–2 ऊपर से उतरते आते हैं। हम ऑलराउण्डर हैं। सभी काम करने वाले को ऑलराउन्ड कहा जाता है। तुम भी ऑलराउन्डर हो। आदि से अन्त तक तुम्हारा पार्ट है। यह भी जानते हो इस चक्र का अब अन्त है। तो भी ऊपर से आते रहते हैं। बहुत बचे हुए हैं। जो आते रहते हैं। वृद्धि को पाते रहते हैं। मनुष्य हैं बिल्कुल बेसमझ। उन्हों को समझदार बनाया जाता है। तुम अपन को बेसमझ कह, इन देवताओं को समझदार समझते हो। बाप ने तुम बच्चों को हम सो का अर्थ भी समझाया है। वह लोग तो कह देते हम आत्मा सो परमात्मा। उनको तो ड्रामा के आदि, मध्य, अन्त ड्युरेशन आदि का भी कुछ पता नहीं है। तुमको बाप ने समझाया है। इस शरीर में अभी तुम ब्राह्मण हो। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा शिवबाबा ने तुमको एडॉप्ट किया है। पढ़ाते हैं। यह तो याद रहना चाहिए ना। भगवानुवाच हमको पढ़ा रहे हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान है। सभी आत्माएँ इस धागे में पिरोये हुए हैं। अभी तुम जानते हो हम सो शुरू–2 में

देवता थे। फिर हम सो क्षत्री धर्म में आये अर्थात् सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी में आये। इतने जन्म लिये। यह सभी पता होना चाहिए। यह नॉलेज पहले तुम्हारे में बिल्कुल नहीं थी। अभी बाप ने समझाया है। इतने जन्म हम सूर्यवंशी में थे फिर चन्द्रवंशी, वैश्यवंशी और शूद्रवंशी बने। यह बाजोली है। अभी फिर शूद्र से ब्राह्मण बने हैं। ब्राह्मण से देवता बनेंगे। विराट रूप दिखलाते हैं ना। तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। कैसे हम नीचे उतरते 84 जन्म लेते हैं। ब्राह्मण कुल में आये फिर डीटी डिनायस्टी में आये। अभी तुम हो ब्राह्मण चोटी। चोटी सभी से ऊँच होती है। तुम्हारे जैसा ऊँच कौन सडावे(कहलावे)। भगवान बाप आकर तुमको पढ़ा रहे हैं। तुम कितने भाग्यशाली हो। अपने भाग्य की कुछ सराह तो करो। बाहर में तो सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते हैं। यह तो है निराकार बाप। यह बाप कल्प2 आकर एक ही नालेज देते हैं, पढ़ाते हैं। पढ़ाई तो हरेक पढ़ते हैं ना। बैरीस्टरी की नालेज पढ़2 कर बैरीस्टर बनेंगे ना। वह सभी मनुष्य मनुष्य को पढ़ाते आते हैं। अभी यह है भगवानुवाच। मनुष्य को तो भगवान कहा नहीं जाता। वह तो है निराकार। यहाँ आकर तुम बच्चों को पढ़ाते हैं। पढ़ाई न सूक्ष्मवतन न मूलवतन में होती है। पढ़ाई यहाँ ही होती है। इसमें मुँझने की तो बात ही नहीं। स्कूल में कब स्टुडेन्ट्स कहेंगे क्या हम मुँझते हैं। हमको निश्चय नहीं होता। पढ़ाई तो पढ़कर अपना हिस्सा लेते हैं। यह ल0ना0 सतयुग आदि में विश्व का मालिक कैसे बने? जरूर बाप द्वारा ही बने। बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। बच्चे यह 84 का चक्र है। बाप तो सच्चा बतावेंगे ना। भगवान कोई रांग थोड़े ही बता सकते। बड़ा भारी इम्तहान है। इस समय तो है प्रजा का प्रजा पर राज्य। राजा–रानी है नहीं। सतयुग में थे। अभी कलियुग अन्त में है नहीं। इसको कहा जाता है पंचायती राज्य। गीता में लिख दिया है कौरव और पाण्डव। रूहानी पण्डे तो तुम हो ना। सभी को रूहानी घर का रास्ता बताते हो। वह है तुम आत्माओं का रूहानी घर। रूह जिस्म द्वारा पार्ट बजाती है। यह बातें तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं जानते। ऋषि–मुनि आदि कोई भी न रचयिता को न रचना के आदि मध्य अन्त को जानते थे। लाखों वर्ष कह देते हैं; परन्तु उनका भी कोई पूरा हिसाब किताब नहीं है। आधा2 भी हो न सके। पूरा आधा दुखधाम फिर पूरा आधा सुखधाम। अभी है दुखधाम। रावण राज्य। रावण को दस शीश दिखाते हैं। बाप ने समझाया है 5 विकार स्त्री के, 5 पुरुष के हैं। गदहे मिसल बन पड़े हैं। भार ढोते–2 थक गये हैं। इसलिए अभी पुकारते हैं बाबा इस छी–छी दुनिया से ले चलो। यह है पतित दुनियाँ। विषियस और वायसलेस नाम है ना। यह बड़ी समझ की बातें हैं। बाप कितना ऊँचे ते ऊँचा है; परन्तु कितना साधारण है। यहाँ कोई बड़े आदमी ऑफीसर्स आदि से मिलते हैं तो उनका कितना रिगार्ड रखते हैं। इन्द्रा गांधी कहाँ जाती है तो ढेर के ढेर मनुष्य खड़े हो जाते हैं दीदार करने। पतित दुनिया में पतित मनुष्य पतितों का ही दीदार करते रहते। पावन तो है ही गुप्त। बाहर से दिखाई कुछ भी नहीं पड़ता। बाप को कहा जाता है नालेजफुल। ब्लीसफुल। सभी बातों में फुल है। इसलिए उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। हरेक मनुष्य के पोज़ीशन की महिमा अलग होती है। वज़ीर को वज़ीर, प्राइम मिनिस्टर को प्राइम मिनिस्टर कहेंगे। यह फिर ऊँच ते ऊँच है भगवान। सभी से ऊँच है। गायन है ना " सगल सुतल धारी....."। हम सभी आत्माएँ उस बाप के रस्सी में पिराये हुए हैं। फिर नम्बरवार आते हैं। रुद्र माला है बेहद की। नम्बरवार आते हैं इसलिए कहते हैं सारी सृष्टि की आत्माएँ पिरोये हुए हैं। सबसे बड़ा पोजीशन है निराकार बाप का। जिसके हम सभी बच्चे हैं। वहाँ हम सभी बाप के साथ परमधाम में कैसे रहते हैं। वह है घर। यहाँ सभी को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। कोई एक जन्म का भी पार्ट बजाते हैं फिर वापिस जाना है। बाप समझाते हैं यह मनुष्य सृष्टि का वैरायटी झाड़ है। एक न मिले दूसरे से। आत्मा तो एक ही है। बाकी शरीर एक न मिले दूसरे से। एक नाटक भी दिखाते हैं जिसमें एक जैसे दो सिकल बनाते हैं, जिसमें मुँझ जाते हैं कि पता नहीं हमारा पति यह है या यह। यह तो बेहद का खेल है। इसमें वैराइटी है। एक न मिले दूसरे से। हरेक के फीचर्स अलग हैं। उम्र भल एक जैसी हो; परन्तु फीचर्स एक हो न सके। हर जन्म में फीचर्स बदल जाते हैं। कितना बड़ा बेहद का नाटक है। तो उनको जानना चाहिए ना। सारी सृष्टि के आदि,मध्य,अन्त का ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में है। हरेक का ड्रामा

में जो पार्ट है वही बजावेंगे। ड्रामा में रीपलेस हो नहीं सकता। बेहद का ड्रामा है ना। जन्म लेते रहते हैं। सभी के फीचर्स अलग2 हैं। कितने वैराइटी फीचर्स हैं। यह नालेज सारी बुद्धि से समझने की है। कोई किताब आदि है नहीं। गीता का भगवान हाथ में गीता ले आया क्या? वह तो ज्ञान का सागर था ना। पुस्तक थोड़े ही ले आया। पुस्तक तो भक्तिमार्ग में बनते हैं। तो यह सभी ड्रामा में नूँध है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे सेकण्ड से। तुम बच्चों को तो सभी समझा दिया है। चक्र पूरा हो फिर नये सिरे शुरू होगा। अभी तुम पढ़ रहे हो। बाप को भी तुम जान गये हो। रचयिता को भी जान गये तो रचना को भी जान गये हो। मूलवतन से यहाँ आते हैं पार्ट बजाने। स्टेज कितनी बड़ी है। इनका कोई माप नहीं हो सकता। कोई भी पहुँच नहीं सकते। इसलिए बेअन्त गाया हुआ है। आगे इतनी कोशिश नहीं करते थे। अभी कोशिश करते हैं। साइंस भी अभी है। फिर कब शुरू होगी जब उन्हों का पार्ट होगा। तो इतनी सभी बातें शास्त्रों में थोड़े ही हैं। शास्त्रों में तो सभी रांग ही रांग है। सुनाने वाले के बदली सुनने वाले का नाम डाल दिया है। यह काली आत्मा वह गोरी आत्मा। काली आत्मा इन द्वारा सुनकर फिर गोरी बनती है। नालेज से कितना ऊँच पद मिलता है। यह है गीता पाठशाला। कौन पढ़ाते हैं। भगवान राजयोग सिखलाते हैं। अमरपुरी के लिए। इसलिए इनको अमरकथा भी कहा जाता है। जरूर संगम पर ही सुनाई होगी। जिन्होंने कल्प पहले पढ़ा है वही आकर पढ़ेंगे और नम्बरवार पद पावेंगे। तुम यहाँ कितना बारी आये हो? अनगिनत। कोई पूछे यह नाटक कब शुरू हुआ है? नहीं। यह तो अनादि चला आ रहा है। गिनती की बात हो नहीं सकती। पूछने का ख्याल भी नहीं होता। तुम कोई से पूछो शास्त्र कबसे शुरू हुई? कह देंगे परंपरा से। शास्त्र कब शुरू होती है यह ज्ञान तो है नहीं। भक्तिमार्ग कब शुरू होता है, कैसे हमने भक्ति की है। पहले2 होती है परमपिता परमात्मा शिव की। फिर सूर्यवंशी देवताओं की। चन्द्रवंशी की। फिर पूजा भी व्यभिचारी बन जाती है। बूतप्रस्ती बन पड़ते हैं। मनुष्यों की पूजा, जानवरों की पूजा करने लग पड़ते हैं। बाकी इतनी भुजाएँ आदि कोई होती नहीं है। मम्मा देवी को कितनी भुजाएँ दी हैं, जैसे ब्रह्मा को भी बहुत भुजाएँ दे देते हैं। ब्राह्मण बहुत हैं ना। यह भुजाएँ सभी ब्राह्मणों की है। शास्त्रों में सभी है भक्ति की कहानियाँ जो पढ़ते रहते हैं। यह थोड़े ही कहते हैं हम कृष्ण हैं। न संस्कृत ही पढ़ते हैं। सतयुग में यह अनेक भाषाएँ आदि कुछ भी नहीं होती। एक धर्म, एक भाषा, एक राज्य की तुम स्थापना कर रहे हो। वह लोग तो शान्ति स्थापन के प्राइज देते रहते हैं। शिवबाबा तुमको सारे विश्व में शान्ति स्थापन करने की कैसे राय देते हैं। उनको तुम क्या प्राइज देंगे। वह तो और ही तुमको प्राइज देते हैं। लेते नहीं हैं। यह समझने की बातें हैं ना। कल की बात है जब कि इन्हों का राज्य था। अभी तो अनेक हो गये हैं। रहने की जगह ही नहीं। वहाँ तो दूसरे तीसरे मंजिल बनाने की भी दरकार ही नहीं। कोठियाँ आदि की भी दरकार नहीं। वहाँ तो सोने चाँदी के मकान बनते हैं। सांइस के जोर से झट मकान बन जाते हैं। यहाँ साइंस से सुख भी है तो दुख भी है। सारी खलास हो जावेगी। इनको कहा जाता है फॉल ऑफ पॉम्पियाँ। माया का कितना पॉम्प है। साहूकारों के लिए तो जैसे यह स्वर्ग है। इसलिए वह तुम्हारी बात भी नहीं सुनते। बाप बैठ बच्चों को सुनाते हैं हम तुमको घर ले जाने आये हैं। वह है मुक्तिधाम। जहाँ सभी आत्माएँ रहती हैं। फिर नई दुनिया है सुखधाम। कल की बात है स्वर्ग था ना। कैसे स्थापन हुआ यह भी तुम जानते हो। आगे तुम भी नहीं जानते थे। कोई भी नहीं जानता था। यहाँ तो बाप तुमको डायरैक्ट पढ़ाते हैं। बाहर में तो फिर बच्चे पढ़ाते हैं। मित्र–सम्बन्धी आदि भी याद आते रहते हैं। यहाँ तो बाप बैठ समझाते हैं। दिन प्रतिदिन तुम याद की यात्रा में पक्के होते जावेंगे। फिर तुमको कुछ भी याद नहीं आवेगा। सिर्फ घर और राजधानी याद आवेंगे। फिर यह नौकरी आदि थोड़े ही याद आवेगा। मरेंगे ऐसे जैसे कि बैठे–2 हार्टफेल होते हैं। दुख की बात ही नहीं रहेगी। हॉस्पीटल आदि तो कुछ भी नहीं रहेगी। मुक्ति और जीवनमुक्ति का एक सेकण्ड में वरसा मिलता है। बाप को जाना और स्वर्ग के मालिक बने। तुम्हारा तो हक है ना। सभी का नहीं कहेंगे। सभी स्वर्ग में आवेंगे क्या! अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।